...संरक्षण को भी बरकरार रखने की आवश्यकता होगी। (1) 15 April PG II Sem.

(2) Ch. (D)

Date 27/02/18

स्थाई कृषि (Setteled agriculture)

कई जनजातियाँ ऐसी रही हैं जो स्थायी कृषि को पेशा अपना कर पूर्णरूप से कृषक बन गई है। इनके पास अपनी कृषि योग्य भूमि होती है। भूमि के पास इनका अपना मकान होता है। कई कृषक परिवार साथ-साथ एक गाँव में रहते हैं। सभी परिवार की अपनी खेती भूमि खेती करने के लिए अथवा कृषिकरण एवं खेतों की जुताई के लिए अपना पशु, बैल, भैंस आदि होते

Scanned with CamScanner

Lesson - 1

(2)

Date __/__/____

जाति एवं जनजाति

भारतीय संस्कृति

है। स्थाई कृषि से स्थानांतरण कृषि की तुलना में ज्यादा अनाज का उत्पादन किया जाता है।

स्थाई कृषि में लगी हुई जनजातियाँ समतल क्षेत्रों में निवास करती है। भारत के विभिन्न समतल क्षेत्रों में रहने वाली जनजातियों द्वारा स्थाई कृषि को पेशा अपनाई गई है। असम एवं मेघालय की खासी जनजाति पूर्वी उत्तर-प्रदेश में थारू जनजाति, झारखण्ड राज्य की संथाल, मुण्डा, उरांव, हो एवं खड़िया जनजातियों, मध्य-प्रदेश एवं उड़ीसा की बैगा एवं गोंड जनजातियों, पश्चिम भारत की भील, मीना जनजातियाँ, हिमाचल प्रदेश की पंगवाल एवं स्वांगला जनजातियाँ, आंध्रप्रदेश की कोया जनजाति तथा तमिलनाडु की मलयाली जनजाति का मुख्य पेशा स्थाई कृषि है।

स्थाई कृषि पेशा में लगी हुई जनजातियाँ अपने परिवार के सदस्यों के श्रम से कृषि करती है। अगर परिवार के सदस्यों से अधिक मानव शक्ति की आवश्यकता होती है। तब वे लोग अपने गाँव समाज एवं रिश्तेदारों से आपसी श्रम का विनिमय करते है। कृषि कार्य करने के लिए ये लोग मजदूर नहीं लगाते है तथा आपसी श्रम विनिमय के द्वारा कृषि कार्य करते है। अतः कृषि कार्य में इन्हें किसी प्रकार की मजदूरी का भुगतान नहीं करना पड़ता है। जनजातीय समाजों में कृषि कार्य भी उनके सामाजिक संगठन का एक हिस्सा होता है।

जनजातिय कृषि दो प्रकार की होती है। 1. बरसाती कृषि और दूसरा शुष्क कृषि, जनजातिय कृषकों के पास दो प्रकार की खेती योग्य भूमि होती है जिन्हें दोन एवं टांड कहा जाता है। दोन भूमि में बरसाती विधि से खेती की जाती है क्योंकि ऐसी भूमि में बरसात का पानी अधिक दिनों तक जमा रहता है। इस प्रकार की भूमि में बरसात के दिनों में धान का फसल लगाया

Date __/__/____

जाता है। टॉड भूमि में मुख्य विधि द्वारा महुँआ, मकाई, उरद, तील, अरहर, चना, सरसों, कोदों आदि की खेती की जाती है।

जनजातिय कृषक अपने घर के सामने की जमीन को बाड़ी तथा पीछे की जमीन को खाड़ी इन दोनों प्रकार की जमीनों में साग, सब्जी की खेती बरसात के दिनों में ही की जाती है। अगर बाडी या खड़ी में कुआ की व्यवस्था होती है तब उनमें आम, मुनगा, केला, कटहल, पपीता, अमरूद आदि के पेड़ लगाए जाते है। पेड़ जमीन के किनारे-किनारे लगाया जाता है और बची हुई जमीन में साग-सब्जी की खेती की जाती है। जनजातिय कृषक खेती करने के लिए हल, बैल का प्रयोग करते है एवं हल, जुआठ, हेंगा, कुदाल, सिकड़ खंती, गैंता आदि। इनकी प्रमुख कृषि उपकरण होते है। ये लोग अपनी कृषि की शुरूआत बरसात शुरू होते ही कर देते है। जब बरसात का पहला पानी पड़ जाता है तब से लोग अपने खेत, हल, बैल एवं अन्य कृषि उपकरणों की पूजा करते है। अर्थात खेत में धान की बीज बो देते है। महिलाएं खेतो की जुताई का कार्य नही करती है बल्कि अन्य सभी प्रकार के कार्यों को करती है। रोपनी, कटनी, बोझा, ढुलाई, ओसवन आदि कृषि कार्यों में महिलाएँ पुरूषों से पीछे नहीं रहती है।

जनजातिय कृषक सिंचाई के लिए मुख्य रूप से वर्षा पर निर्भर रहते है। अगर वर्षा ठीक से होती है तब फसल भी ठीक से होती है। बरसात का पानी तलाब में कुछ दिनों तक जमा रहता है। चूंकि इनके खेतो को साल भर पानी नहीं मिल पाता है। अतः गरमा तथा रबी फसल की खेती ये नही कर पाते है।

जनजातिय कृषक के ऊपर भी आधुनिकीकरण का प्रभाव पड़ा है। अब वे सिंचाई के लिए कुआ बनवाते है। पानी निकालने के लिए डिजल मशीन खरीदते है। साग-सब्जी की खेती के प्रति विशेष आकर्षण इन जनजातियों में पाया जाता है। ये लोग उत्तम किस्म में खाद, बीज, कीटनाशक

Page No. ____

Scanned with CamScanner

Date ___/___/___

दवाओं, रसायनिक खाद तथा जैविक खाद के प्रयोग करने लगे हैं। इन्हें कृषि उपकरण बैल, बीज, खाद डीजल मशीन आदि के लिए सरकार से ऋण एवं अनुदान की व्यवस्था की जाती है। जनजातिय कृषकों को सिंचाई व्यवस्था के अभाव में साल भर काम नहीं मिल पाता है, जून से दिसम्बर तक वे कृषि कार्य में व्यस्त रहते हैं। लेकिन इसके बाद उन्हें बेरोजगारी का सामना करना पड़ता है। इस अवधि में वे मजदूरी कमाने निकल जाता है।

जनजातियों कृषकों की सबसे बड़ी समस्या जमीन का बंजर होना तथा सिंचाई के साधनों की कमी इनके पास पुश्तैनी कृषि भूमि होती है। अधिकांश परिवार के पास कृषि भूमि होती है। अगर उन्हें सिंचाई की व्यवस्था हो जाए तब उन्हें बेरोजगारी की समस्या नहीं झेलनी पड़ेगी कृषि कार्य के प्रत्येक अवसर पर पूजा-पाठ एवं जादू टोना एवं त्योहार मनाए जाते हैं।

Stop

Ch 2 E

Scanned with CamScanner